

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

कानपुर (नगर छाया समाचार)। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के वैज्ञानिकों के लिए, आज राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुरोध पर यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है ताकि एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट के डिजाइन और संचालन के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं के बारे में प्रशिक्षण तथा ताजे पानी के उपयोग तथा एफ्लुएंट को कम करने की नई प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्रदान किया जा सके। श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय चीनी संस्थान, कानपुर ने बताया कि यह कार्यक्रम विशेष रूप से चीनी उद्योग में पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के लिए डिजाइन किया गया है ताकि चीनी उद्योग को एक स्वच्छ उद्योग बनाया जा सके और गंगा जैसी पवित्र नदियों को दूषित करने वाले इस उद्योग के प्रदूषकों से बचा जा सके।

उद्घाटन दिवस के दौरान, प्रतिभागियों को चीनी कारखानों में विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की चीनी का उत्पादन करने

वाले चीनी कारखानों में इकाई संचालन और बिजली निर्यात सुविधाएं के बारे में श्री वी.पी. सिंह और श्री महेंद्र यादव द्वारा बताया गया। पानी की कमी वाले क्षेत्रों और बंदरगाहों पर स्थित चीनी रिफाइनरियों के उदाहरणों का हवाला देते हुए ताजे पानी के उपयोग और एफ्लुएंट को कम करने के लिए विस्तार से बताया गया। प्रतिभागियों को विभिन्न इकाई संचालन के दौरान, ताजे पानी की खपत और एफ्लुएंट के मापन के महत्व तथा सुधारात्मक उपाय करने के लिए एफ्लुएंट की गुणवत्ता के संबंध में ऑनलाइन डेटा दिए जाने के बारे में भी बताया गया। श्री वीरेंद्र कुमार, वरिष्ठ उपकरण अभियंता ने कहा, चीनी उद्योग को उपकरणों के अंशकन (केलिब्रेशन) और अपशिष्टों के परीक्षण के विभिन्न मापदंडों जैसे BOD, COD, TSS, TDS और pH, के परीक्षण के लिए सुविधाएं बनाने की आवश्यकता है और इसलिए एक पर्यावरण प्रकोष्ठ अनिवार्य रूप से बनाया जाना चाहिए। चीनी कारखाने के एफ्लुएंट ट्रीटमेंट, ऐसे संयंत्रों का मानकीकरण, लागत-अर्थव्यवस्था और स्थिर संचालन के लिए बरती जाने वाली



सावधानियां के लिए नवीनतम तकनीकों के बारे में प्रोफ. स्वेन ने अपने व्याख्यान में बताया। उन्होंने यह भी कहा कि अलग-अलग कारखाने में गन्ने की पेराई अलग-

अलग हो सकती है, इस प्रकार एफ्लुएंट की मात्रा भी भिन्न हो सकती है, अतः एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट को डिजाइन करते समय इसका पर्याप्त प्रावधान किया जाना चाहिए।

ताजे पानी के उपयोग व एफ्लुएंट को कम करने पर नई प्रौद्योगिकी पर जोर

कानपुर, 6 दिसम्बर। केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की ओर से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट के डिजाइन और संचालन के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं के बारे में प्रशिक्षण तथा ताजे पानी के उपयोग तथा एफ्लुएंट को कम करने की नई प्रौद्योगिकी की जानकारी प्रदान किया जा सके। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि यह कार्यक्रम विशेष रूप से चीनी उद्योग में पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के लिए ताकि चीनी उद्योग को एक स्वच्छ उद्योग गंगा जैसी पवित्र नदियों को दूषित करने वाले इस उद्योग के प्रदूषकों से बचा जा सके। चीनी कारखानों में बिजली निर्यात सुविधाओं के बारे में वी.पी. सिंह और महेंद्र यादव ने पानी की कमी वाले क्षेत्रों और चीनी रिफाइनरियों के उदाहरणों का हवाला देते हुए पानी के उपयोग और एफ्लुएंट को कम करने के लिए



संगोष्ठी में मौजूद एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व अन्य।

डिजाइन किया गया है विस्तार से बताया गया। ताजे पानी की खपत और एफ्लुएंट के मापन के महत्व पर चर्चा के साथ ही एफ्लुएंट की गुणवत्ता के संबंध में ऑनलाइन डेटा दिये जाने के बारे में जानकारी दी। डा. स्वेन ने चीनी कारखाने के एफ्लुएंट ट्रीटमेंट, ऐसे संयंत्रों का मानकीकरण, लागत अर्थव्यवस्था और स्थित संचालन के लिए बरती जाने वाली सावधानियों के लिए नवीनतम तकनीकों के बारे में प्रकाश डाला।

● एनएसआई में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

NSI imparts training on effluent treatment plants

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute Director, Prof Narendra Mohan, while addressing a five-day training programme for scientists of Central Pollution Control Board and National Mission for Clean Ganga at the institute on Monday, said the customised training programme was being organised on the request of Central Pollution Control Board to impart training about standard operating procedures designing and operating effluent treatment plants and newer technologies for minimising fresh water usage and waste discharge.

He said the programme was specially designed to address environmental issues in the sugar industry so as to make it a cleaner industry to avoid pollutants from this industry contaminating the holy river Ganga.

During the inaugural day, an overview was given to the participants about unit operations in factories producing different types of sugars by various processes and also having power export facilities.

Technology for minimising fresh water usage and

effluent discharge was elaborated with examples of sugar refineries situated in areas of water scarcity and at ports. The participants were also informed about the importance of measurement of fresh water consumption and waste water discharge from various unit operations and transmission of data with respect to effluent quality so as to take corrective measures.

The sugar industry is required to create facilities for calibration of instruments and also testing of effluents for various parameters like BOD, COD, TSS, TDS and pH etc., hence an environment cell is essential.

Lectures were also delivered about latest techniques for treating sugar factory effluents, standardisation of such plants, cost-economics and precautions required to be taken for steady operation. Since sugarcane crushing in a factory may vary, the quantity of effluent may also vary, and thus adequate provisions should be made while designing the effluent treatment plants to absorb such shocks.

IIT-K CONTINUES ITS GLORIOUS RUN IN CAMPUS PLACEMENTS:

Continuing its glorious run in the placement season 2021-22, the Indian Institute of Technology, Kanpur, witnessed a new high in offers made by recruiters.

Kick-starting the season virtually on December 1, the IIT-Kanpur received a total of 940 offers at the end of Day 4, out of which, 773 were accepted. This is in addition to the 156 pre-placement offers (PPOs) that were already accepted.

In 2020-21, at the end of Day 3, 665 offers were made whereas in 2019-20, 594 offers were made. This shows a significant increase of 32.5 per cent in the number of offers made till Day 3 this year, which is 887.

At the end of Day-4, 109 placement offers were made by core sector companies to 97 students. This constitutes over 11.5 per cent of the total jobs offered. On the other hand, 16 startups offered 45 jobs, till Day 4.

IIT Kanpur has pulled in top recruiters like Axtria, EXL, Graviton, Goldman Sachs, ICICI Bank, Intel, Microsoft, OLA, Rubrik, Samsung, Quadeye, Uber, among others, so far this season.

IIT Kanpur Director Prof Abhay Karandikar said, "IIT Kanpur is known for its academic excellence and as an institute of trust. It is this trust that pulls in top recruiters from across the world year after year."

The new highs we are witnessing so far this year is indicative of the growing trust of recruiters on the institute and its students, despite the pandemic-induced challenges. We are confident and hopeful that we would end the remainder of the season on a high as well."

At the end of Day 4, the institute received 47 international offers.

This is a big jump of 150 per cent over last year when 19 international offers were received.

The highest packages so far are USD 274,250 for international and Rs. 1.2 crore by domestic companies. In total, 49 offers above Rs 1 crore have been received so far.

Out of the total of 773 students placed, about 55 per cent are undergraduates and 45 per cent are post-graduates. So far, 216 companies have finished their recruitment process, and more are lined up for the next few days.